समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Tuesday, 22 September 2026

सिंहस्थ की तैयारी मे टंकराव : मुख्यमंत्री शिंदे और मंत्री भुजबळ आमने-सामने

Publisher

Published on 20 Aug 2025

महाराष्ट्र के नासिक में आयोजित होने वाले **सिंहस्थ कुंभ मेला 2027** को लेकर तैयारियाँ ज़ोरों पर हैं। यह मेला धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से भी बेहद अहम है। लेकिन इसी बीच, सरकार के भीतर **मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे** और मंत्री **छगन भुजबळ** के बीच इस आयोजन को लेकर मतभेद खुलकर सामने आ गए हैं। इन मतभेदों ने न केवल प्रशासनिक तैयारियों पर प्रश्नचिह्न लगाया है बल्कि गठबंधन सरकार महायुती की एकजुटता पर भी सवाल खड़े कर दिए हैं।

टकराव की जड़

तैयारियों की समीक्षा बैठकों के दौरान छगन भुजबळ ने कई विकास कार्यों में **धीमी प्रगति और लापरवाही** की ओर इशारा किया। उनका कहना है कि इतने बड़े धार्मिक आयोजन की योजना और क्रियान्वयन में किसी भी तरह की देरी खतरनाक साबित हो सकती है।

दूसरी ओर, मुख्यमंत्री शिंदे का रुख है कि सरकार पूरी क्षमता के साथ कार्य कर रही है और हर विभाग अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रहा है। शिंदे समर्थक नेताओं का आरोप है कि भुजबळ केवल **राजनीतिक अंक हासिल करने के लिए** सार्वजनिक मंचों पर इस तरह की आलोचना कर रहे हैं।

सिंहस्थ का महत्व

- **धार्मिक दृष्टि से**: सिंहस्थ कुंभ एक ऐसा पर्व है, जिसमें देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु आते हैं।
- **आर्थिक दृष्टि से**: इस दौरान नासिक शहर और आसपास का इलाका व्यापार, होटल, परिवहन, और पर्यटन से अभूतपूर्व राजस्व अर्जित करता है।

- **प्रशासनिक दृष्टि से**: लाखों लोगों की सुरक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ, स्वच्छता, यातायात और आपात सेवाओं का प्रबंधन किसी चुनौती से कम नहीं है।

इन्हीं कारणों से सिंहस्थ को लेकर किसी भी प्रकार का राजनीतिक टकराव, आयोजन की गुणवत्ता पर असर डाल सकता है।

राजनीतिक पृष्ठभूमि

यह विवाद केवल तैयारियों तक सीमित नहीं है, बल्कि **जिम्मेदारियों और नेतृत्व की होड़** से भी जुड़ा है।

- भुजबळ का मानना है कि **पालक मंत्री होने के नाते** उन्हें अधिक अधिकार और संसाधन मिलने चाहिए।
- वहीं मुख्यमंत्री शिंदे और उनके समर्थक यह संदेश देना चाहते हैं कि **अंतिम निर्णय और नियंत्रण मुख्यमंत्री कार्यालय के पास ही रहेगा।**

भाजपा के कुछ नेता भी चाहते हैं कि सिंहस्थ जैसे बड़े आयोजन की जिम्मेदारी उनके पास रहे, ताकि राजनीतिक और जनसंपर्क स्तर पर उन्हें सीधा लाभ मिले।

असर महायुती पर

महायुती सरकार (शिवसेना-शिंदे गुट, भाजपा और एनसीपी-भुजबळ गुट) की एकता पहले ही कई मुद्दों पर सवालों के घेरे में रही है। अब सिंहस्थ की तैयारियों को लेकर खींचतान ने इस गठबंधन में **तनाव और अविश्वास** को और बढ़ा दिया है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि अगर यह विवाद सुलझा नहीं, तो न केवल प्रशासनिक कार्य प्रभावित होंगे, बल्कि आने वाले चुनावों में इसका असर मतदाताओं की धारणा पर भी दिख सकता है।

मुख्य चुनौतियाँ

1. **बुनियादी ढांचा**: सड़कों का चौड़ीकरण, पार्किंग स्थलों का निर्माण, अस्थायी टाउनशिप की तैयारी।
2. **सुरक्षा और स्वास्थ्य**: लाखों श्रद्धालुओं की सुरक्षा व्यवस्था, पुलिस बल की तैनाती और स्वास्थ्य सुविधाओं का इंतजाम।
3. **पर्यावरण संतुलन**: गोदावरी नदी की स्वच्छता और प्रदूषण नियंत्रण।
4. **समन्वय की कमी**: अलग-अलग विभागों और नेताओं के बीच आपसी खींचतान से काम की गति प्रभावित होना।

जनता और विशेषज्ञों की राय

नासिक के स्थानीय नागरिकों और व्यापारियों का कहना है कि उन्हें नेताओं के बीच टकराव से अधिक चिंता इस बात की है कि तैयारियाँ समय पर और व्यवस्थित रूप से पूरी हों।

विशेषज्ञ मानते हैं कि सिंहस्थ जैसा आयोजन केवल एक धार्मिक पर्व नहीं बल्कि महाराष्ट्र की **सांस्कृतिक पहचान** है। इसे राजनीति का अखाड़ा बनाने से बचाना चाहिए।

समाधान की राह

- **संयुक्त समिति का गठन**: जिसमें सभी प्रमुख दलों और नेताओं का प्रतिनिधित्व हो।
- **स्पष्ट कार्यविभाजन**: कौन से कार्य भुजबळ देखेंगे और कौन से मुख्यमंत्री की निगरानी में होंगे।
- **समन्वय बैठकों मे पारदर्शिता**: मीडिया और जनता के बीच स्पष्ट जानकारी साझा की जाए।

निष्कर्ष

सिंहस्थ कुंभ मेला 2027 महाराष्ट्र और देश के लिए एक **ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर** है। मुख्यमंत्री शिंदे और मंत्री

भुजबळ के बीच यह खींचतान अगर समय रहते हल नहीं हुई तो इसका सीधा असर आयोजन की गुणवत्ता और राज्य की छवि पर पड़ेगा। अब देखना यह है कि महायुती सरकार इस चुनौती को सामंजस्य में बदलकर सिंहस्थ को एक यादगार आयोजन बना पाती है या नहीं।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.